नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मृत्यु भय का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 पूजा खन्ना*, डॉ0 सीमा गुप्ता**

** पूर्व प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, के.जी.के. महाविद्यालय, मुरादाबाद, ** एसो0 प्रोफे0, मनोविज्ञान विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद*

सारांश

प्रत्येक व्यक्ति में निहित योगताएँ, क्षमताएँ, रूचि, अभिरूचि, मृत्यु भय आदि भिन्न भिन्न होते है जो कि उनके अनेके वातावरणीय सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित होते हैं तथा किसी व्यक्ति में सम्पूर्ण व्यक्तिव को प्रभावित करते हैं । इन्हीं वातावरण, परिस्थिति, आयु, लिंग इत्यादि के कारण व्यक्ति के मृत्यु भय के प्रतिमानों में अन्तर की कल्पना की जा सकती हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन में नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों में मृत्यु भय के स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया हैं। जिसके लिए उत्तर प्रदेश के नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत 100–100 (50 पुरूष एवं 50 महिला) कर्मचारियों का चयन अनियत विधि के आधार पर किया गया। अध्ययन हेतु डॉ. उपेन्द्र धर, डॉ. सविता मेहरा एवं डॉ. सन्तोष घर द्वारा निर्मित मृत्यु भय अपनी का उपयोग किया गया । परिबर्तियों के मध्य अन्तर ज्ञात करने के लिए टी मूल्य का उपयोग किया गया। समस्त नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. के कर्मचारियों के मध्य टी–मूल्य 8.62 ज्ञात हुआ है जो कि .01 एवं .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता हैं। अतः स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. के कर्मचारियों के मष्त्यु भय में अन्तर होता है जबकि आन्तरिक समूह महिला कर्मचारी के मध्य मृत्यु भय में सार्थक अन्तर पाया गया तथा पुरूष कर्मचारियों के मध्य कोई भी सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ0 पूजा खन्ना,
डॉ0 सीमा गुप्ता,
''नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मृत्यु भय का तुलनात्मक अध्ययन'
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 18–23
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 4 (SM 442)

परिचय –

मृत्यु भय किसी व्यक्ति के अपने मृत्यु के भय की ओर संकेत करता हैं। मृत्यु भय से आत्मविश्वास की हानि होती है और तंत्रिका रोग पैदा हो जाता है जोकि सहाय अवस्था और अवजाद ग्रस्त होने के अहसास की तीव्रता है । मनुष्य का अपनी मृत्यु के प्रति जागरूक होना भय पैदा करता है जिससे उसकी अपनी पहचान बन जाती है । फ्राइम और अस्तित्ववादी विशेषज्ञों के अनुसार किसी व्यक्ति का अपने मृत्यु के प्रति सचेत होने से उसको जीवन का मतलब समझने और उत्तरदायी होने का प्रेरणा देता है ।

किसी मनुष्य की स्वयं की मृत्यु के केन्द्रीयकरण का विचार व्यक्ति की मृत्यु की संभावनाओं को गंभीरता से विचार करने के लिए किया जा सकता है । (मैक चाटी 1980) जैसे कि मृत्यु व्यक्ति के जीवन का अंतिम चरण है । यह सामान्यताः किसी व्यक्ति के स्वयं की अथवा उसके सम्बन्धियों के मरण के रूप में देखी जाती हैं ।

वर्ष 2006 में थारसन एवं पोबेल के एक प्राप्त परिणाम दर्शाते है कि महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा मृत्यु का भय अधिक होता है । वृद्ध महिलाओं की अपेक्षा युवावस्था के लोगों में मृत्यु भय अधिक पाया जाता है ।

वर्ष 2007 में कुँमाऊ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड के मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. मौ. गुफरान ने 60 से 75 साल के 120 प्रयोज्यों पर शोच्च किया जिसमें 30 विधवा, 30 विधुर, 30 विवाहित पुरूष तथा 30 विवाहित स्त्रियों पर मृत्यु भय का शोध किया तथा शोध के पश्चात् उन्होनें पाया कि विधवा व विधुर में मृत्यु भय विवाहितों की तुलना में ज़्यादा होता है ।

उद्देश्य :–

• नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मष्त्युभय का स्तर ज्ञात करना।

• नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मृत्युभय का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

• नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मुत्यु भय का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पना :–

• नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा।

• नागरिक पुलिस विभाग के पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा।

• पी.ए.सी. के पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा ।

• नागरिक पुलिस विभागएवं पी.ए.सी. के पुरूष कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा।

• नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. के महिला कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा।

प्रतिदर्शः–

अध्यनन हेतु उत्तर प्रदेश के नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत 200 कर्मचारियों का चयन अनियत विधि से किया गया जिसमें दोनों वर्गों के 100 (50 महिला + 50 पुरूष) कर्मचारी लिए गये ।

उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु डॉ. उपेन्द्र धर, डॉ. सविता मेहरा एवं डॉ. सन्तोष धर द्वारा निर्मित मृत्युभय मापनी का प्रयोग किया गया । इसमें 10 प्रश्न है तथा सभी प्रश्न व्यक्ति के मृत्यु भय से सम्बन्धित हैं ।

परीक्षण की विश्वसनीयता 200 व्यक्तियों (25–25) के प्रतिदर्श पर पूर्ण रूप से सम्बन्धित विभाजित अर्द्धक विश्वसनीयता नियतांक के मापन के द्वारा विश्वसनीयता गुणांक 0. 87 आया। परीक्षण की वैधता का गुणांक 0.93 आया ।

नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. के कर्मचारियों के मृत्यु भय मापनी से प्राप्त माध्य, मानक विचलन तथा टी–मूल्य का प्रर्दशन ।

तालिका संख्या 01

क्रम सं.	नाम	नागरिक पुलिस विभाग			पी.ए.सी.					.01 से . 05 विश्वास स्तर
		स.	अध्ययन	मानक	क्रम सं.	माध्य	मानक	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	
01.	कुल कर्मचारी	100	10	1.83	100	8	1.53	.232	8.62	सार्थक अन्तर है
02.	महिला कर्मचारी	50	6	2.24	50	6	1.87	.41	00	सार्थक अन्तर नहीं है
03.	पुरूष कर्मचारी	50	4	1.28	50	2	1.10	.24	8.33	सार्थक अन्तर है

शोध परिणाम तालिका संख्या 01 में प्रदर्शित किये गये हैः–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग का मध्यमान 10 तथा पी.ए.सी. का मध्यमान 8 है ।

अतः मध्यमान के आधार पर नागरिक पुलिस विभाग में पी.ए.सी. के कर्मचारियेां में मृत्यु भय उच्च स्तर का पाया गया ।

तालिका सं. 01 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि समस्त नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी.में कार्यरत कर्मचारियों के मध्य टी–मूल्य 8.62 ज्ञात हुआ जो कि .01 एवं . 05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है । अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना संख्या 01

नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा स्वीकृत की जाती है ।

परिणाम से यह भी स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों के मध्य टी मूल्य 8.33 ज्ञात हुआ जो कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है । अतः परिकल्पना संख्या 4 नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों के मृत्यु भय में सार्थक अन्तर होगा स्वीकृत की जाती है । तालिका संख्या 01 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि समस्त नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत महिला कर्मचारियों के मध्य 00 टी मूल्य हैं जो कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है । अतः परिकल्पना संख्या 05 कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत महिला कर्मचारियों में सार्थक अन्तर होगा अस्वीकृत की जाती है ।

पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मृत्यु भय से प्राप्त मध्यमान मानक विचलन तथा टी–मूल्य का प्रदर्शन–

तालिका संख्या 2

क्रम सं	**नाम**	**पुरूष कर्मचारी**			**महिला कर्मचारी**					**.01 से .05 विश्वास स्तर**
		स	मध्यमान	मानक विचलन	स	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य	
01.	नागरिक पुलिस विभाग	50	4	1.28	50	6	2.24	.36	5.55	सार्थक अन्तर है
02.	पी.ए.सी	50	2	1.10	50	6	1.87	.30	1.13	सार्थक अन्तर नहीं है

शोध परिणाम तालिका सं. 2 में प्रदर्शित किये गये है–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य टी–मूल्य 5.55 ज्ञात हुआ हैं प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर पुरूष एवं महिला कर्मचारी में सार्थक अन्तर पाया गया । अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना संख्या 2 नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत पुरूष तथा महिला कर्मचारियों के मष्त्यु भय में सार्थक अन्तर होगा स्वीकृत की जाती है ।

तालिका संख्या 2 की क्रम सं. 2 को देखने से पता चलता है कि पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों का टी–मूल्य 1.13 है परिणाम दर्शाते है कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर पुरूष एवं महिला कर्मचारियों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः परिकल्पना कि पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष एवं महिला कर्मचारियों में सार्थक अन्तर होगा अस्वीकृत की जाती है

प्रत्येक व्यक्ति में वैयक्तिक भिन्नाएँ पाई जाती है एक ही व्यवसाय में कार्यरत होने पर भी दो पुरूष या दो स्त्रियों में वैयक्तिकता पाई जाती है ।

यह वैयक्तिकता उनके व्यक्तित्व के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकती है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएँ, क्षमतांए रूचि, अभिरूचि, मृत्यु भय आदि भिन्न भिन्न होते है जो कि उनके अनेक वातावरणीय, सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित होती हैं । अतः इन्हीं वातावरण परिस्थिति आयु लिंग इत्यादि के कारण भी व्यक्ति के मृत्युभय के प्रतिमानों में अन्तर की कल्पना की जा सकती हैं ।

प्रस्तुत अध्ययन में दो पुलिस विभाग नागरिक पुलिस एवं पी.ए.सी. के दो वर्गों महिला एवं पुरूष के मध्य मृत्यु भय के अन्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया है कि क्या आयु, लिंग एवं व्यवसााय में अन्तर होने के कारण दो वर्गों के मृत्यु भय में भी अन्तर पाया जाता है ।

तालिका संख्या 01 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नागरिक पुलिस विभाग एवं पी. ए.सी. के मध्य सार्थक अन्तर होता है । सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग का मध्यमान 10 है तथा सम्पूर्ण पी.ए.सी. के कर्मचारियों का मध्यमान 8 हैं । दोनों ही विभागों में मृत्यु भय उच्च स्तर का है । इसी प्रकार नागरिक पुलिस विभाग के पुरूष कर्मचारी का मध्यमान 4 तथा मानक विचलन 1.28 है तथा पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों का मध्यमान प्राप्तांक 2 तथा मानक विचलन 1.10 है । दोनों का टी–मूल्य 8.33 है । अतः स्पष्ट है कि .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर हैं । दोनों ही विभागों के पुरूष कर्मचारियों में मृत्यु भय उच्च स्तर का है । यहां यह ज्ञात होता है कि मृत्यु भय के स्तर पर विभागों के अन्तर का प्रभाव देखने को मिला । तालिका संख्या 1 के क्रम संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत महिला कर्मचारियों का अध्ययन प्राप्तांक 6 तथा मानका विचलन 2.24 है तथा पी.ए.सी. में कार्यरत महिला कर्मचारी का मध्यमान 6 तथा मानक विचलन 1.87 है तथा टी–मूल्य 00 हैं जो कि यह दर्शाता है कि दोनों विभागों के महिला कर्मचारियों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा यह भी ज्ञात होता है कि मृत्यु भय के स्तर पर विभागों में अन्तर होने पर भी कोई सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला है । समान लिंग के कर्मचारियों के भिन्न विभाग होने पर भी मृत्यु भय स्तर में कोई अन्तर नहीं आया ।

इसी प्रकार तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समान विभाग में लिंग में अन्तर होने पर मृत्यु भय के स्तर में भी अन्तर देखने को मिलता हैं । नागरिक पुलिस विभाग में कार्यरत पुरूष कर्मचारी का मध्यमान 4 तथा मानक विचलन 1.28 है तथा महिला कर्मचारी का मध्यमान 6 तथा मानक विचलन 2.24 है । इन दोनों के मध्य टी–मूल्य 5.55 है जो कि सार्थक अन्तर को दर्शाता है । यहॉ परिणामों से स्पष्ट है कि समान विभागों में लिंग में अन्तर होने पर मष्त्यु भय के स्तर में अन्तर पाया गया तथा तालिका संख्या 2 की क्रम संख्या 2 से स्पष्ट है कि पी.ए.सी. में कार्यरत पुरूष कर्मचारियों का मध्यमान 2 तथा मानक विचलन 1.10 है तथा महिला कर्मचारियों का मध्यमान 6 तथा मानक विचलन 1.81 है तथा दोनों के मध्य टी–मूल्य 1.13 है । अतः स्पष्ट है कि दोनों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है । यहॉ भी समान विभाग होने पर लिंग में अन्तर से मृत्यु भय के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । अतः यहॉ परिणामों के अवलोकन से

स्पष्ट है कि परिकल्पना संख्या 1, 2, 4 स्वीकृत होती है तथा परिकल्पना संख्या 3 एवं 5 अस्वीकष्त होती है ।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण नागरिक पुलिस विभाग एवं पी.ए.सी. में कार्यरत कर्मचारियों को मृत्यु भय उच्च स्तर का पाया गया । वातावरण लिंग, विभाग आदि में भिन्नता होने पर भी मृत्यु भय के स्तर में कोई प्रभाव देखने को नहीं मिला । प्रत्येक व्यक्ति में निहित योग्यताएँ, क्षमताएँ, रूचि, अभिरूचि, मृत्यु भय आदि भिन्न–भिन्न होते है जो कि उनके अनेक वातावणीय, सामाजिक एवं शारीरिक कारणों से प्रभावित होती है परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में मृत्युभय के प्रतिमानों पर वातावरण, शारीरिक, सामाजिक कारण पड़ा । मृत्यु भय का स्तर उच्च पाया गया तथा विभाग, आयु, लिंग आदि में अन्तर होने पर भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

सन्दर्भ सूची

- *गुफरान मौ. इण्डियन जनरल ऑफ हूमन रिलेशन 2008, बॉल्यूम–33 पेज 1–7*
- *Studies of Death Anxity by Google From Internet.*
- *श्रीवास्तव डी.एम., वर्मा प्रीति असामान्य मनोविज्ञान*
- *श्रीवास्तव डी.एम., वर्मा प्रीति आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान*
- *श्रीवास्तव डी.एम., वर्मा प्रीति, मनोविज्ञान, शिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी ।*
- *राय हाकिम, अपराध, अपराध निरोध एवं पुलिस प्रक्रिया भाग–2*
- *राय हाकिम, अपराध निरोध तृतीय संस्करण*
- *घर उपेन्द्र, मेहरा सविता एवं घर सन्तोष द्वारा निर्मित मृत्यु भय आपनी*
- *पी.ट.सी. 9 बटालियन उत्तर प्रदेश 100 नागरिक पुलिस विभाग कर्मचारियों का साक्षात्कार*
- *पी.टी.सी. 9 बटालियन उत्तर प्रदेश 100 पी.ए.सी. कर्मचारियों का साक्षात्कार*